दो शब्द

मुलाकातों से ओशो की चर्चा कई वक्त होती है; ऐसे मौके में अति उपयोगी विषय छेड़ा जाता है, वह वार्तालाप की टेप-रिकार्डिंग नहीं हो पाती है। किंतु जो साहब हाजर होते हैं, उन्हीं में से किसी ने ठीक संकलन किया मिल जाता है, तो उन विचारों की नोंद पर से एकाध उपयोगी पुस्तिका तैयार हो जाती हैŸ।

यह संकलन उसी प्रकार का है। उम्मीद है, वाचकवृंद को ठीक उपयोगी बन पाएगा।

--जीवन जागृति केंद्र

एक मित्र हैं। वर्षों से उन्हें जानता हूं। पहले धन की दौड़ में थे, अब धर्म की दौड़ में हैं। दौड़ वही है, लेकिन पहले वे अपने को गृहस्थ मानते थे, अब संन्यस्त मानते हैं। मैं सुनता हूं तो आश्चर्य होता हैः क्या ईश्वर को पाने की आकांक्षा भी बहुत गहरे में ऐश्वर्य को ही पाने की आकांक्षा नहीं है? लोभ के मार्ग बहुत सूक्ष्म हैं और ईश्वर को पाने की कामना और कल्पना भी क्या लोभ की ही चरम परिणति नहीं है? मनुष्य का लोभ असीम है। वह मोक्ष भी पाना चाहता है। जब कि सत्य यह है कि जब तक चित्त कुछ भी पाना चाहता है तब तक वह कभी भी मुक्त नहीं हो सकता है, क्योंकि पाने की चाह ही तो मौलिक अमुक्ति है। और जो मुक्त नहीं है, वह परमात्मा को कैसे जानेगा? चित्त की परम मुक्ति में जो जाना जाता है वही तो परमात्मा है।

--ओशो